आचार्य पुष्पदन्त और आचार्य भूतबली

जीवन-परिचय : आचार्य पुष्पदन्त और आचार्य भूतबली का नाम साथ-साथ ही प्राप्त होता है, पर पुष्पदन्त आचार्य को भूतबली आचार्य से ज्येष्ठ माना गया है। दोनों ही आचार्य आचार्य धरसेन के पास श्रुत (शास्त्रों) की शिक्षा प्राप्त करने गये थे।

पुष्पदन्त आचार्य का समय वीर-निर्वाण संवत् 633 के पश्चात् ईसवी सन् प्रथम-द्वितीय शताब्दी के लगभग माना जाता है। इनका समय 30 वर्ष माना जाता है।

आचार्य पुष्पदन्त का जन्मस्थान करहाट के आसपास माना जाता है। वर्तमान में सतारा जिले का करहाट नगर ही इनका जन्मस्थान माना जाता है। शिक्षा समाप्ति के पश्चात् सुन्दर दाँतों के कारण इनका नाम पुष्पदन्त पड़ा था।

आचार्य पुष्पदन्त अर्हद्बली के शिष्य थे। आचार्य अर्हद्बली ने ही पुष्पदन्त और भूतबली आचार्य को श्रुत की शिक्षा प्राप्त करने के लिए आचार्य धरसेन के पास भेजा था। उनके पास रहकर ही दोनों आचार्यों ने 'महाकर्मप्रकृति प्राभृत' की शिक्षा प्राप्त की थी। अत: इनके दीक्षागुरु अर्हद्बली और शिक्षागुरु आचार्य धरसेन हैं।

प्रतिभा : आचार्य पुष्पदन्त अपने समय के आचार्यों में अत्यन्त मान्य थे और इसीलिये वे मुनिसमिति के सभापति कहलाते थे। इन्होंने ही षट्खंडागम ग्रन्थ की रचना का कार्य आरम्भ किया था। आचार्य पुष्पदन्त प्रतिभाशाली एवं ग्रन्थ-निर्माण में निपुण थे। आचार्य पुष्पदन्त ने अपनी रचना जिनपालित को पढ़ायी और अपने को अल्प आयु समझकर गुरुभाई भूतबली को अवशिष्ट कार्य को पूर्ण करने के लिये प्रेरित किया।

आचार्य भूतबली की शारीरिक और आत्मिक ऊर्जा इतनी बढ़ी हुई थी कि उन्हें सभी उपलब्धियाँ अपने आप प्राप्त हो गयी थी। ऋद्धि और तपस्या के कारण हर प्राणी उनकी पूजा एवं प्रतिष्ठा करता था। सौम्य आकृति के साथ-साथ आपके केश अत्यन्त संयत और सुन्दर थे।

आचार्य भूतबली महाकर्मप्रकृतिप्राभृत (सिद्धान्त-ग्रन्थों) के ज्ञाता थे। इन्होंने भगवान महावीर की परम्परा से प्राप्त सिद्धान्त-ग्रन्थों के मंगलसूत्रों का संकलन किया है। आचार्य भूतबली षट्खण्डागम ग्रन्थ के कर्त्ता नहीं अपितु प्ररूपक हैं।

विशेष कथा : आचार्य भूतबली ने षट्खण्डागम ग्रन्थ की रचना पूर्ण कर उसे ग्रन्थ रूप में निबद्ध किया और ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी को ग्रन्थ की पूजा की। इसी कारण यह पंचमी श्रुतपंचमी के नाम से विख्यात हुई। तत्पश्चात् भूतबली ने उस महान ग्रन्थ षट्खण्डागम को अपने ही भाँजे जिनपालित कोपुष्पदन्त गुरु के पास भेजा। जिनपालित के हाथ में षट्खण्डागम ग्रन्थ को देखकर पुष्पदन्त गुरु ने भी श्रुत भक्ति के अनुराग से खुश होकर श्रुतपंचमी के दिन 'षट्खण्डागम ग्रन्थ
की पूजा की। उसी समय से श्रुतपंचमी पर्व लोक में प्रचलित हुआ।

रचना-परिचय : षट्खण्डागम (छक्खण्डागम) ग्रन्थ छह खंडों में विभक्त है। यह ग्रन्थ आगम के ग्रन्थों में विशेष महत्त्वपूर्ण एवं अद्भुत ग्रन्थ है। महावीर की दिव्य देशना को सुरक्षित रखने के लिए इस ग्रन्थ की रचना की गयी है। जैन शास्त्रों में महान एवं प्राचीन षट्खण्डागम और कषायपाहुड ये दो ही ग्रन्थ हैं।

षट्खण्डागम का विषय गूढ़, गम्भीर एवं महत्त्वपूर्ण है। इसमें कर्म सिद्धान्त, जीव-भाव, जीवस्थान, जीवों की गति-स्थिति आदि विषयों का वर्णन है।